# ड्रामा

## ड्रामा की परिभाषा और उसका सत्य अस्तित्व (Real Fact Drama)

ये विश्व नाटक किया-प्रतिकिया, पुरूषार्थ-प्रालब्ध-पुरूषार्थ, कर्म-फल-कर्म के घटना चक पर आधारित एक अनादि अविनाशी, विविधतापूर्ण, परम कल्याणकारी नाटक है, जो हर ५००० वर्ष के वाद हु ब हू पुनरावृत होता है।

(१) ड्रामा और परमात्मा (२) ड्रामा और आत्मा (३) ड्रामा और पुरूषार्थ (४) ड्रामा और स्व-स्थिति (५) ड्रामा और साक्षीपन (६) ड्रामा और कर्म सिद्धान्त (७) ड्रामा और विश्व कल्याण (८) ड्रामा और पारस्परिक सम्बन्ध (९) ड्रामा और उसकी विविधता (१०) ड्रामा और निर्दोष दृष्टि (११) ड्रामा की हूबहू पुनरावृति (१२) ड्रामा और उंच- नीच का भाव (१३) ड्रामा और योग (१४) ड्रामा का प्रयोग (१५) ड्रामा की विशेषतायें (१६) ड्रामा के विषय में विविध बातें

## १. विश्व नाटक एवं परमात्मा -क्या परमात्मा विश्व नाटक का रचता है?

परमात्मा इस विश्व नाटक का रचता नहीं लेकिन ज्ञाता है, जो संगम पर इस विश्व नाटक का ज्ञान देकर पुराने विश्व को नये में बदलने का निमित बनता है। परमात्मा का भी इस विश्व नाटक में आत्माओं के समान ही पार्टधारी है परन्तु उसका पार्ट अन्य आत्माओं से भिन्न है। वही आकर इसका ज्ञान देता है, जिसके आधार पर ये नाटक पुनरावृत होता है और नवयुग आता है, इसलिए उसको रचता कहा जाता है। यदि परमात्मा इस विश्व नाटक का रचयिता होता तो इस विश्व की घटनाओं और स्थिति को देखकर अनेक प्रकार के मिथ्या दोष उसके ऊपर आ जाते। "मेरा ज्ञान देने का पार्ट इस समय ही इमर्ज होता है। ...भकित मार्ग में मेरा ये ज्ञान इमर्ज नहीं होता है। ...ड्रामा अनुसार जो भक्त जिस भावना से पूजा करते हैं, उनका साक्षात्कार कराने में निमित बना हुआ हूँ ...जैसे तुम्हारी आत्मा में ८४ जन्मों का पार्ट भरा हुआ है, वैसे हमारा भी ड्रामा में पार्ट है। नूंध के सिवाये जास्ती में कुछ कर नही सकता" ...(सा.बाबा २८-६-७२ रिवा.)

हर आत्मा का अपने समय पर पार्ट इमर्ज होता है ...ये खेल बडा वण्डरफुल बना हुआ है। मेरा ज्ञान देने का पार्ट भी ड्रामा अनुसार अभी ही इमर्ज होता हे। भक्ति मार्ग में मेरा ज्ञान देने का पार्ट ही नहीं है, उस समय भावना अनुसार साक्षात्कार करा देता हूँ। उस समय ज्ञान इमर्ज नहीं होता। ...(सा. बाबा रिवा. १७-६-९७)

## २. ड्रामा और आत्मा

सुख-शान्ति हर जीवात्मा की मूलभूत प्यास है। ड्रामा का ज्ञान, आत्मा को संकल्प-विकल्पों से परे होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होने में परम सहयोगी है। मूल स्वरूप में स्थित आत्मा ही सम्पूर्णता का अनुभव करती है। सम्पूर्णता, सन्तुष्टता की जननी है और सन्तुष्टता आत्मा की सुख-शान्ति और खुशी का मूलाधार एवं दर्पण है।

यह बना-बनाया अविनाशी ड्रामा है। हरेक आत्मा में अपना-अपना पार्ट नूंधा हुआ है, जो हरेक अपना पार्ट फिर से रिपीट करते रहते हैं। इसमें जरा भी फर्क नहीं रहेगा। अविनाशी पार्ट है। फिल्म में जो पार्ट एक बार रिपीट हुआ, वही फिर रिपीट होगा। (सा.बाबा १४-३-७२ रिवा.)

कोशिश कर अन्तर्मुखी होना चाहिए, तब ही पाप कटेंगे ....जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। सबसे जास्ती पाप ब्राह्मणों के हैं। उनमें भी नम्बरवार हैं। जो वहुत ऊंच बनते हैं, वही बिल्कुल नींच भी बनते हैं... ड्रामा को अच्छी रीति समझना हैं ...जो पहले पावन बनते हैं वही पहले पतित बनते हैं। ...(सा. बाबा ७-३-९९ रिवा.)

## ३. ड्रामा और पुरूषार्थ

ये विश्व नाटक पुरूषार्थ-प्रालब्ध-पुरूषार्थ, कर्म-फल-कर्म, किया-प्रतिक्रिया, के घटना चक पर आधारित है। कोई भी आत्मा कर्म के बिना रह नहीं सकती और कोई भी कर्म निष्फल नहीं हो सकता। इसलिए पुरूषार्थ इस विश्व-नाटक की स्वभाविक किया है। पुरूषार्थ आत्मा का स्वभाविक गुण है। इसलिए कोई भी आत्मा पुरूषार्थ के विना रह नहीं सकती। इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझना भी एक पुरूषार्थ है। कोई भी आत्मा पुरूषार्थ के बिना रह नहीं सकती परन्तु पुरूषार्थ क्या करना है, उसकी समझ चाहिए।

जो पूर्ण रूप से आत्माभिमानी है वही इस ड्रामा के राज (रहस्य) को जान सकता और इसे ड्रामा कहने का अधिकारी है। इसलिए जब तक वह अवस्था हो तब तक ड्रामा का ज्ञान होते भी पुरूषार्थ अवश्य करना है और करना ही पड़ेगा। ज्ञान होना अलग है परन्तु ज्ञान की धारणा होना अलग है।

**ड्रामा हूबहू रिपीट होता तो पुरूषार्थ क्यों? या क्या ड्रामा का यथार्थ ज्ञान पुरूषार्थहीन बना देगा?**

नहीं, ड्रामा को यथार्थ रीति समजना भी एक विशेष पुरूषार्थ, यथार्थ पुरूषार्थ है। ड्रामा को समझने का और साक्षी होकर इस ड्रामा में पार्ट बजाने और देखने का। स्व-स्थिति में स्थित आत्मा ही साक्षी हो सकती है।

हर आत्मा खुशी चाहती है और मनोरंजन आत्मा की एक स्वभाविक किया है। जो ड्रामा को अच्छी रीति समझता है, वह साक्षी होकर इसको देखता है और जो साक्षी होकर इसे देखता है वह सदा खुशी में रहता है और मनोरंजन का अनुभव करता है।

देह से न्यारा और निर्लिप्त स्थिति वाला ही इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता है और इसका यथार्थ सुख ले सकता है। देह से न्यारा होने, निर्लिप्त स्थिति और साक्षी स्थिति में स्थित होकर इस विश्व नाटक को देखने का पुरूषार्थ बहुत गहन पुरूषार्थ है। इस पुरूषार्थ वाला पुरूषार्थहीन कैसे हो सकता है। ड्रामा को आगे रखकर यदि कोई पुरूषार्थहीन बन जाता तो वह ड्रामा का यथार्थ ज्ञाता नहीं है। वास्तविकता तो ये है कि इस आत्मा के पुरूषार्थहीन बनने का भी ड्रामा में पार्ट है और ड्रामा का यथार्थ ज्ञाता इसे भी साक्षी होकर देखेगा, इसे भी निर्दोष अनुभव करेगा।

यथार्थता ये है कि हर आत्मा का पुरूषार्थ अपने समय पर ही होता है परन्तु हमको इसके लिए रूकना नहीं है।

पुरूषार्थ अनुसार प्रारब्ध बनती है। पुरूषार्थ ड्रामा अनुसार चलता है। परन्तु ड्रामा समझ बैठ नहीं जाना है। ...(खांशी का मिसाल) बिना दवाई खाये ठीक नहीं होगी। ...(सा. बाबा १७-७-६८)

ज्ञान कितना सहज है परन्तु पूरी धारणा नहीं कर सकते हैं। बाबा को देखो ड्रामा पर कितना निश्चय है। जो पास हुआ सो ड्रामा। ऐसे नहीं कहना चाहिए कि ऐसा होता तो यह न करते ...आगे के लिए भल पुरूषार्थ करो, जो कोई भूल न हो। ...(सा. बाबा २२-२-६९रिवा.)

शिव बाबा का सिजरा अविनाशी है। यह फिर साकार सिजरा बनता है। ड्रामा अनुसार शुद्र से ब्राह्मण बनना ही है। तुम शुद्र से ब्राह्मण न बनो यह हो ही नहीं सकता। ड्रामा अनुसार उतने ही ब्राह्मण बनते हैं जितने देवता बनेंगे। ...ड्रामा अनुसार कल्प पहले जिसने ज्ञान की धारणा की है सो करेंगे। हम साक्षी होकर देखते हैं। पुरूषार्थ तो जरूर करना पड़े। पुरूषार्थ बिगर प्रारब्ध मिल नहीं सकती। (सा. बाबा ७-११-७२ रिवा.)

ड्रामा को फिरना है, यह चेतन्य ड्रामा है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड जो एक्ट करते है, सभी कल्प पहले माफिक, ड्रामा प्लेन अनुसार। पुरूषार्थ भी हम ड्रामा अनुसार करते हैं। यह तुम्हारी बुद्धि में है। और कोई कुछ भी नहीं समझ सकते हैं। (सा. बाबा २३-११-७२ रिवा.)

यह राज (रहस्य) तुम ब्राह्मण ही जानते हो। सो भी नम्बरवार। जिन्होंने कल्प पहले जितना पुरूषार्थ किया था, उतना ही अब करते हैं। ऐसे नही कि जो ड्रामा में हो। फिर भी पुरूषार्थ का नाम आता है। ड्रामा को पुरूषार्थ कराना ही है, बच्चों को पुरूषार्थ करना ही है। जैसा पुरूषार्थ वैसा पद मिलेगा। (सा. बाबा ११-१-७३ रिवा.)

तुम बच्चों को ताकत मिलती है आधाकल्प के लिए। फिर भी नन्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। एक जैसी ताकत नहीं पा सकते, न एक जैसा पद पा सकते हैं। यह भी पहले से नूंध है। ड्रामा में अनादि नूंध है। ...यह सारा बना-बनाया खेल है। पूछते हैं पुरूषार्थ बडा या प्रालब्ध बडी? अब पुरूषार्थ बिगर तो प्रालब्ध मिलती नहीं। पूरूषार्थ से प्रालब्ध मिलती है ड्रामा अनुसार। तो सारा बोझ ड्रामा पर आ जाता है। ...आत्मा में पहले से ही पार्ट नूँधा हुआ हे आदि से अन्त तक। (सा. बाबा ६-१२-९९ रिवा.)

## ४. ड्रामा और स्व-स्थिति

स्व-स्थिति में स्थित आत्मा ही इस विश्व नाटक को यथार्थ रीति अर्थात् दृष्टा बनकर देख सकती और ड्रामा का ज्ञान आत्मा को स्व-स्थिति में स्थित होने में परम-सहयोगी है। ड्रामा के ज्ञान की यथार्थ धारणा आत्मा को सेकेण्ड में संकल्प-विकल्प से पार कर देता, जो स्व-स्थिति में स्थित होने के लिए परमावश्यक है। ड्रामा का ज्ञान आत्मा को सहज निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि का अनुभव कराता है, जो आध्यात्मिक पुरूषार्थ का परम लक्ष्य है। बाप को तो खुशी और गम की दरकार नहीं। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। तुमको भी न खुशी और न गम होना चाहिए। (सा. बाबा २२-८-६८)

बच्चों को ड्रामा पर पक्का रहना हे तो उस समय ही फिकर से फारिग हो जायेंगे। (सा. बाबा २३-१२-६८)

आगे चल ड्रामा क्या दिखलाता है, सो साक्षी होकर देखना है। पहले से ही बाबा साक्षात्कार नहीं करायेंगे कि यह होगा। फिर तो आर्टीफिशियल हो जाये। यह बडी समझ की बातें हैं। (सा. बाबा २४-१०-६९ रिवा.)

बहुत फर्स्ट क्लास खेल है। इसको जानने से बुद्धि पूर हो गई है। हम इस खेल को जान गये तो समझते हैं मजा ही मजा है। ...सारा दिन बुद्धि में यह ख्याल चलना चाहिए कैसा वण्डरफुल खेल है। ...मनुष्य इस वण्डरफुल ड्रामा को भी नहीं जानते। जो अच्छी रीति जानते हैं और समझाते हैं, उनको जरूर खुशी का पारा चढता होगा। जो बहुत दान करते हैं, उनको नशा भी होगा ना। (सा. बाबा २१-४-७२ रिवा.)

बाप तो बिल्कुल एक्यूरेट ही कहेंगे ...है तो यह सब ड्रामा। बाबा का भी ड्रामा, इनका भी ड्रामा, तुम्हारा भी ड्रामा। ड्रामा बिगर कोई चीज होती ही नहीं। सेकेण्ड सेकेण्ड ड्रामा चलता रहता है। ड्रामा को याद करने से हिलेंगे नहीं। (सा. बाबा २५-५-९९ रिवा.)

खिलाडी बनकर खेल देखते और खेल खेलने में मजा आता है, उसको आपदा भी मनोरंजन अनुभव होगी -ये है मास्टर रचता की स्टेज। जैसे महा-विनाश को भी मनोरंजन का रूप दे दिया है। (अव्यक्त बापदादा २७-११-७८) (दीदी और बृजेन्द्रा दादी से) ऐसा क्यों? यह व्यर्थ संकल्प पत्थर तोडना है। लेकिन एक ही शब्द 'ड्रामा' याद आ जाता है तो व्यर्थ खत्म। एक ड्रामा शब्द के आधार से हाई जम्प दे देते हो। उसमें कुछ मास लग जाते हैं और उसमें एक सेकेण्ड लगता। (अ. बापदादा १७-३-८१)

"बापदादा ने जो आज देखा तो वर्तमान समय के अनुसार अपने ऊपर, हर कर्मेन्द्रियों के ऊपर कन्ट्रोल रखना कन्ट्रोलिंग पॉवर, वह और ज्यादा चाहिए। अर्थात् स्वयं की स्वयं प्रति स्टॉप तो स्टॉप हो जाये, यह है कर्मातीत अवस्था तक पहुँचने की विधि।" (अ. बापदादा १७-३-८१)

## ५. ड्रामा और साक्षीपन

जिसे इस विश्व नाटक का यथार्थ ज्ञान है, वही साक्षी हो सकता है। यदि हठ से साक्षी बनते तो वह स्थिति सदा काल नहीं रह सकती। यही कारण है कि सभी आत्मायें ऊपर से सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था में आते हुए भी उतरती कला में आ जाती हैं। परमात्मा ही इस विश्व नाटक का पूर्ण ज्ञाता है और वही पूर्ण साक्षी है और सभी आत्मायें नम्बरवार साक्षी बनती हैं। देह-भान और देहाभिमान वाली आत्मा कभी पूर्ण साक्षी नहीं हो सकती। परमात्मा अभी ज्ञान देकर साक्षी बनाता है और वह ज्ञान ही आत्माओं को चढती कला में ले जाता है। तुम समझ सकते हो जो भी इस दुनिया में है जड वा चेतन, सभी हूबहू रिपीट करेंगे। (अ. बा. ९-१-६९)

ये ड्रामा बडा एक्यूरेट है। इसमें जरा भी फर्क नहीं पड सकता। यह अनादि-अविनाशी, बना-बनाया ड्रामा है। बडा वण्डरफुल है। इसमें नई एडीशन हो नहीं सकती। गायन भी है बनी बनाई बन ...चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होये। साक्षी होकर देखना पडता है। ...तुमको कोई भी बात में अफसोस करने की जरूरत नहीं, सदैव हर्षित रहना है। ऐसी-ऐसी बातों पर विचार कर पक्का कर लेना चाहिए। (सा.बाबा २०-२-९९)

वाह बाबा और वाह ड्रामा के गीत गाते रहो तो सदा लगन में मगन रहेंगे। क्योंकि लगन में मगन वही रह सकता है जो साक्षी होकर हर पार्ट बजाता है। (अ. बापदादा २०-६-७७)

जो साक्षी होगा वह कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होगा। ....इस साक्षीपन की सीट पर बैठकर ड्रामा देखो तो बहुत मजा आयेगा। (अ. बापदादा १५-४-८१)

## ६. ड्रामा और कर्म-सिद्धान्त

ये ड्रामा कर्म-फल-कर्म के घटनाचक पर आधारित हैं। कर्म जीवात्मा का स्वभाविक गुण हैं और कोई कर्म निष्फल नहीं हो सकता। हर कर्म का फल आत्मा को समय पर स्वतः मिलता है। किसी भी आत्मा को बिना कर्म किये कोई भी अच्छा या बुरा फल नहीं मिल सकता और न किसी दूसरे के किये गये कर्म का फल किसी दूसरे को मिल सकता। हर आत्मा को ही कर्म का फल मिलता है ये कर्म का अटल विधान हे। इसीलिए गायन है कि जीवात्मा अपना आप ही मित्र और अपने आप ही अपना शत्रु है। जो ड्रामा का यथार्थ ज्ञाता होगा, उससे कोई विकर्म नहीं हो सकता क्योंकि वह स्व-स्थिति में स्थित रहेगा और स्व-स्थिति वाले में आत्मिक शक्ति होगी। "तुम ईश्वर की भावी नहीं कहेंगे। ईश्वर का भी ड्रामा में पार्ट है। तुम कहेंगे ड्रामा की भावी। जो पाप कर्म करते है, उसका दण्ड तो जरूर मिलेगा ना। बाप थोडेही बैठ दण्ड देगा। यह तो ऑटोमेटिक ड्रामा बना हुआ है, जो चलता रहता है। बाप इसके आदि-मध्य-अन्त का राज समझाते हैं।" (सा. बाबा १९-२-६९)

दूसरी तरफ बाप सुप्रीम जस्टिस के रूप में कल्याणकारी होने के कारण बच्चों के कल्याण अर्थ ईश्वरीय लॉ भी बताते हैं। सबसे बडे ते बडा संगम का अनादि लॉ कौन सा है? ड्रामा प्लान अनुसार एक का लाख गुणा प्राप्ति और पश्चाताप वा भोगना यह ऑटोमेटिकली लॉ अर्थात नियम चलता ही रहता है। बाप को स्थूल रीति रस्म के माफिक कहना वा करना नहीं पडता कि इस कर्म का यह लेना (प्राप्ति) वा इस कर्म की ये सजा है। लेकिन यह ऑटोमेटिक ईश्वरीय मशीनरी है। ...इसलिए गाया हुआ है "कर्मो की गति अति गुह्य है।" (अ. बाबादादा ३-५-७७)

हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करने से कभी भी कोई कर्म विकर्म नहीं हो सकता। सदा सुकर्म होगा।... ऐसे ही साक्षी-दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्म बन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे। (अ. बाबादादा ३०-१-७९)

जो कुछ भी ड्रामा में होता है, उसमे कल्याण ही भरा हुआ है। अगर ये स्मृति में सदा रहे तो कमाई जमा होती रहेगी। ...नोलेजफुल बाप के बच्चे बन गये, त्रिकालदर्शी बन गये तो परेशान कैसे हो सकते है। (अ. बाबादादा ३-७-८१)

पॉवरफुल योग के सामने मुश्किल हो ही नहीं सकती। ...ब्राह्मण जीवन है मजे की जीवन, संगमयुग हे मजे का युग, बोझ उठाने का युग नहीं है। बोझ उतारने का युग है। (अ. बाबादादा ३०-११-९९)

### ७. ड्रामा और विश्व-कल्याण

बाबा के महावाक्य है कि ये विश्व नाटक परम कल्याणकारी है। खेल सदा ही सुखदायी होता है। जो इसकी यथार्थता को जानेगा, उसको सदा इसके हर दृष्य में कल्याण भरा हुआ दिखाई देगा। यदि हम गिरे नहीं तो परमात्मा आकर हमको चढाने का पार्ट कैसे बजायेगा और परमात्मा मिलन से आत्माओं जो अतीन्द्रिय सुख मिलता है, उसकी अनुभूति कैसे होगी। इसलिए इसके हर घटना में कल्याण समाया हुआ है, जो अन्तर दृष्टि से देखने पर ही पता चलता है। ड्रामा का यथार्थ ज्ञाता ड्रामा के इस गुह्य रहस्य जान सदा साक्षी-दृष्टा होकर खुशी का अनुभव करता है। परमात्मा में भी सर्व आत्माओं के कल्याण करने का पार्ट नूंधा हुआ है, जो वह संगम पर आकर बजाता है और सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देता है।

ड्रामा की रिपीटीशन का ज्ञान है तो कुछ संशय नहीं होगा ...यह है ही कल्याणकारी युग। जो कुछ होता है, कल्याण के लिए ही होता है। यहाँ फथकने की दरकार नहीं। भक्ति मार्ग वाले कलियुगी मनुष्य फथकते है, मोह है। यहाँ मोह निकल जाता है। (सा.बा. २५-४-६९ रि.)

जब ड्रामा का ज्ञान मिल गया तो वर्तमान समय कल्याणकारी युग है, जो भी दृष्य सामने आता है, उसमें कल्याण भरा हुआ है। वर्तमान भी जान सको लेकिन भविष्य में समाया हुआ कल्याण प्रत्यक्ष हो जायेगा। "वाह ड्रामा वाह' याद रहे तो सदा खुश रहेंगे। पुरूषार्थ में कभी भी उदासी नहीं आयेगी। स्वतः ही आप द्वारा अनेकों की सेवा हो जायेगी। (अ.बा. १-१-७९)

### ८. ड्रामा और पारस्पारिक सम्बन्ध

ये विश्व नाटक है और सर्व आत्मायें इसमें पार्टधारी हैं। इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है, न कोई किसका मित्र है और न ही कोई किसका शत्रु है। न कोई किसको कुछ दे सकता और न ही कोई किसका कुछ ले सकता है। न किसने कुछ दिया और न ही किसने किसी का कुछ लिया है। सब अपना अनादि अविनाशी पार्ट बजा रहे हैं। जो आज अपना है कल पराया होगा और पराया अपना होगा। जो वस्तु आज अपनी है वह कल पराई होगी और जो आज पराई कल अपनी होगी। इस विश्व नाटक के अटल सत्य को जानने वाला कभी ईर्ष्या-राग-द्वेष के प्रभाव में नहीं आ सकता है, वह सदा इनसे मुक्त साक्षी-दृष्टा बन इस नाटक को देखेगा। उसके सभी अपने हैं और सब प्रिय है। ऐसे ज्ञानी पुरूषों के लिए वसुधा एक परिवार है। ड्रामा का यथार्थ ज्ञान न होने से ही किससे मोह और घृणा या द्वेषभाव हो जाता है।

कोई कुछ भी करे, सदैव हर्षित रहना चाहिए। इसमें ग्लानि की बात नहीं। ...मेरी इतनी ग्लानि की, फिर मुझे गुस्सा आता है? ...ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है ...बेचारे अज्ञान अंधेरे में हैं। तरस पडता है ...सदैव मुस्कराते रहना चाहिए।

अब अपनी बुद्धि में है कि यह सुख-दुख, दिन-रात, हार-जीत का ड्रामा बना हुआ है। तो दुर्गति वालों पर रहम आता है क्यों न उन्होंको भी रचयिता और रचना का ज्ञान मिल जाये तो बाप से वर्सा पा सकें। जो खुशी अपने को मिलती है, वह दूसरों को भी देना चाहिए। (सा.बा. २१-४-७२)

यह है ही न्यारा मार्ग। कोई भी समझते नहीं। कोई ने कब सुना नहीं है। ...उन बिचारों का भी कोई दोष नहीं है। कल्प पहले भी ऐसेही विघ्न डाले थे। यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। (सा.बा. ८-६-७२ रिवा.)

## ९. ड्रामा और उसकी विविधता एवं भिन्नता

ये विश्व सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी, विविधतापूर्ण अनादि-अविनाशी परम अद्भुत एवं आनन्ददायक नाटक है इसमें कोई भी दो चीजें या दो घटनायें एक जैसी नहीं हो सकती। विविधता ही उसकी सुन्दरता है, इसके आधार पर ही ये नित्य नया अनुभव होता है। साक्षी होकर इसे देखो तो ये परमानन्दमय है।

आत्मा में ८४ जन्मों का अविनाशी रिकोर्ड भरा हुआ है। न ड्रामा कभी विनाश होता और न एक्ट बदली हो सकती। यह भी वण्डर है कितनी छोटी आत्मा मैं ८४ जन्मों का पार्ट बिल्कुल एक्युरेट भरा हुआ है। यह कभी पुराना नहीं होता, नित्य नया है। हूबहू आत्मा फिरसे अपना वही पार्ट शुरू करती है। (सा.बा. ८-१-९८ रिवा.)

कितना हंगामा हो गया। ड्रामा में जो होने का था, वह हो गया। ख्याल भी नहीं था कि ऐसे होगा। बाबा खुद वण्डर खाता था कि क्या हो रहा हैं। ...यह सब ड्रामा में नूँध है। नाटक में यह सब होता है। ड्रामा में हँसीकुडी आदि आदि सब होता है। यह तो दोनों बाप कहते हैं हमने कुछ भी नहीं किया। (सा.बा. २८-५-९९ रिवा.)

तुम बच्चों को ताकत मिलती है आधाकल्प के लिए। फिर भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। एक जैसी ताकत नहीं पा सकते, न एक जैसा पद पा सकते हैं। यह भी पहले से नूंध है। ड्रामा में अनादि नूंध है। ...यह सारा बना-बनाया खेल है। पूछते हैं पुरूषार्थ बडा या प्रालब्ध बडी? अब पुरूषार्थ बिगर तो प्रालब्ध मिलती नहीं। पुरूषार्थ से प्रालब्ध मिलती है ड्रामा अनुसार। तो सारा बोझ ड्रामा पर आ जाता है। ...आत्मा में पहले से ही पार्ट नूंधा हुआ है, आदि से अन्त तक। (सा.बा. १६-१२-९९ रिवा.)

जब वैरायटी आत्मायें है और वैरायटी ड्रामा है तो सब आत्माओं का एक जैसा पार्ट हो नहीं सकता। अगर किसी आत्मा का तमोगुणी अर्थात अज्ञान का पार्ट है तो शुभ भावना और शुभ कामना से उन आत्माओं को शान्ति और शक्ति का दान दो। ...साक्षी होकर पार्ट देखते हुए, जो शक्ति का दान देना है, वह दो। लेकिन घबराओ मत। (अ. बापदादा ३१-७-७७)

## १०. ड्रामा और निर्दोष दृष्टि

ड्रामा की यथार्थता को जानने वाला भी किसी को दोष नहीं देगा। हर आत्मा अपना अनादि अविनाशी पार्ट बजा रही है तो इसमें किसी का भी दोष नही है। वास्तविकता तो ये है कि जो किसी को दोष देता है, वह ड्रामा का यथार्थ ज्ञाता नहीं लेकिन उस समय अज्ञानता से परिपूर्ण है या ऐसे कहा जाये कि ये दोष देने का भी उसका पार्ट है, जो बजा रहा है। इसलिए ड्रामा के यथार्थ ज्ञाता को किसी से राग-द्वेष नहीं होना चाहिए। ड्रामा की यर्थाथता को जान निर्दोष दृष्टि धारण करना आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए परमावश्यक है।

ये ड्रामा है, इसमें किसी का भी दोष नहीं है। किसी की निन्दा करते तो ज्ञान पूरा बुद्धि में नहीं बेठा है। (सा. बा. २७-९-९७ रिवा.)

यह है ही न्यारा मार्ग। कोई भी समझते नहीं। कोई ने भी सुना नहीं है। ...उन बिचारों का भी कोई दोष नहीं है। कल्प पहले भी ऐसे ही विघ्न डाले थे। यह है भी रूद्र ज्ञान यज्ञ। (सा. बा. ८-६-७२ रिवा.)

## ११. ड्रामा की हू व हू पुनरावृति

इस विश्व नाटक की हर घटना एक निश्वित समय के बाद पुनरावृत होती है जैसे २४ घंटे में दिन-रात, वर्ष में मौसम आदि और ५००० वर्ष के बाद हूबहू पुनरावृत होती है। हर घटना अणु-परमाणु के साथ पुनरावृत होती है। यदि एक अणु भी हूबहू पुनरावृत नहीं हो तो ये हूब हू पुनरावृत का सिद्धान्त लागू नहीं हो सकता है। ये पुनरावृति का सिद्धान्त भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालो पर लागू होना चाहिए तब ही हूब हू पुनरावृत कहा जायेगा।

यह ड्रामा बना हुआ है। बहुत लोग पूछते हैं ड्रामा ऐसा क्यों बना हुआ है। यह तो अनादि है ना। क्यों बना? यह प्रश्न उठ नहीं सकता। यह अनादि-अविनाशी ड्रामा बना हुआ है। बनी बनाई बन रही। ...किसको भी मोक्ष मिल नहीं सकता। (सा.बा. २९-९-७१ रिवा.)

यह ड्रामा है। मक्खी यहाँ से पास हुई, फिर कल्प बाद रिपीट होगा। ड्रामा को अच्छी रीति समझना है। मनुष्य ही समझेंगे। बाबा कितनी अच्छी रीति समझाते है। बाबा वर्ल्ड आलमाइटी अथॉर्टी है। कहते हैं मैं भी ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ हूँ। (सा.बा.५-८-९८ रिवा.)

## १२. ड्रामा और ऊंच-नीच भाव (Superiority - inferiority)

कोई भी आत्मा ऊंच-नींच (Superiority inferiority) नहीं है। हर आत्मा, परमात्मा का बच्चा है और इस विश्व नाटक में पार्टधारी है। हर आत्मा में कोई न कोई विशेषता अवश्य है, जिससे वह परमात्मा को अति प्रिय है। इसमें कोई बडा छोटा नहीं है। ड्रामा के पार्ट अनुसार हर आत्मा अपना ऊंचा नीचा पार्ट बजाती है। जो आज ऊंचा पार्ट बजा रही है, वह कल नीचा भी बजायेगी और जो आज नीचा बजा रही है, वह कल ऊंचा भी बजा सकती है। किसी के ऊंच नीच होने का मापदण्ड उसका बाहृय पार्ट नहीं है लेकिन उसकी ऊंचाई नीचाई उसके स्वभाविक आत्मिक गुणों पर आधारित है और आत्मिक गुण सब में समान है, जो पार्ट में आने पर पार्ट के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप धारण करते हैं। इन आत्मिक गुणों की स्थिति ही आत्मा की ऊंचाई नीचाई के मापदण्ड हैं।

## १३. ड्रामा और योग निर्संकल्प समाधि

निर्विकल्प समाधि ड्रामा का यथार्थ ज्ञाता सहज ही हर बात में विराम लगाकर निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति को धारण कर योग का परम आनन्द अनुभव करता है एवं योग के द्वारा ही ड्रामा के यथार्थ राज (रहस्य) को जाना और धारण किया जा सकता है। दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। योग की सफलता में जैसे परमपिता परमात्मा का स्थान है, वैसे ही उसकी सफलता के पुरूषार्थ में ड्रामा का ज्ञान मुख्य स्थान रखता है। एक सेकन्ड में देह से न्यारा होकर अपने मूल स्वरूप में स्थित होने के लिए ड्रामा का ज्ञान परम सहयोगी है। ड्रामा का ज्ञान और योगाभ्यास, आध्यात्मिक जीवन की सफलता के दो पहिये है।

## १४. ड्रामा का प्रयोग (Application of Drama)

ड्रामा कहने का अधिकारी वही है, जो अपनी स्व-स्थिति में स्थित है क्योंकि आत्मा ही पार्टधारी है और आत्मा ही दृष्टा है। ड्रामा के हूबहू पुनरावृति का सिद्धान्त भूत-वर्तमान- भविष्य तीनों कालो में समान रूप से प्रभावित होता है ये सनातन सत्य है। परन्तु हम पूर्ण ज्ञानी नहीं है इसलिए बाबा ने कहा है कि भूतकाल के लिए ही ड्रामा का प्रयोग करो, जिससे ड्रामा कहकर कोई पुरुषार्थहीन न हो जाये या हतोत्साहित न हो जाये। परन्तु जो भूतकाल पर लागू होता है, वह वर्तमान और भविष्य पर लागू न हो तो वह हू ब हू पुनरावृत कैसे होगा।

## १५. ड्रामा की विशेषतायें –

१. ये विश्व नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी, विविधतापूर्ण है।

२. ये विश्व नाटक अनादि अविनाशी है, जो हर ५००० वर्ष बाद हु बहु पुनरावृत होता है।

३. ये विश्व नाटक एक अनादि अविनाशी खेल है, जो इसको साक्षी होकर देखता है, उसको ये परमानन्दमय अनुभव होता है।

४. ये विश्व नाटक एक घटना-चक है, जिसकी हर घटना एक निश्चित समय के बाद पुनरावृत होती है और ५००० वर्ष के बाद हूबहू पुनरावृत होती है।

५. ये विश्व नाटक विविधतापूर्ण होते भी परम कल्याणकारी एवं न्यायपूर्ण है।

६. साक्षी होकर देखने वाले को ये नित्य नया प्रतीत होता है।

## १६. ड्रामा पर विविध बिन्दु

जिस समय जो आत्मा, जड-चेतन का, अणु-परमाणु का जो पार्ट होता है, उसका चेतन में संकल्प उठता है और वह वातावरण अवश्य आकर्षित करता है। समय पर आत्मा को ये विश्व-नाटक का पार्ट आकर्षित करता है और आत्मा परमधाम से इस घरा पर आ जाती है। इसी तरह समय पर आत्मा को घर जाने की आकर्षण होती है।

**प्रश्न:-** क्या परमपिता परमात्मा ने इस विश्व नाटक को कब रचा है? यदि हाँ, तो कब और कैसे? ड्रामा हूबहू रिपीट होता है तो क्या अणु और परमाणु के साथ रिपीट होती या केवल मानव पार्ट रीपीट होता? ड्रामा कहने का अधिकारी कौन? क्या ड्रामा से किसी का पार्ट परिवर्तन हो सकता है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यो? ड्रामा बीते पर ही लागू होता है या भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर? क्या ये ड्रामा रचा गया है? यदि हाँ तो कब और कैसे?

क्या ये नाटक सुख-दुःख का है? यदि हाँ तो कैसे, यदि नहीं तो कैसे? क्या किसको VIP या हीरो पार्ट मिला है, और किसी को साधारण? यदि हाँ तो क्यों और कैसे? कर्म का सिद्धान्त हमारे ऊपर लागू होता है या नहीं? यदि नहीं तो क्यों? क्या कर्म का सिद्धान्त सर्व आत्माओं पर समान रूप से लागू होता है या कोई भेद है? क्या ये फिल्म अभी शूट हो रही है या पहले से ही शूट हुई है? यदि अभी हो रही है तो कैसे? यह ड्रामा अच्छा है तो क्यों है? यदि नहीं तो क्यों? ये ड्रामा में पूर्व का याद नहीं रहता तो क्यों और उससे क्या लाभ है? यह भूलना अच्छा है या खराब? इस ड्रामा में हम कुछ परिवर्तन कर सकते हैं या नहीं? यदि हाँ तो क्यों और कैसे? यदि नहीं तो क्यों? ये नाटक हर क्षण नया लगता है क्यों? क्या पुरूषार्थ से पार्ट परिवर्तन हो सकता है? (Events can't be changed but we can change our attitude towards events)

## जब ये विश्व नाटक हू ब हू पुनरावृत होता है तो हमारा कर्तव्य क्या है?

बाबा की छत्रछाया हमारे ऊपर है और बाप का वरदानी हाथ हमारे ऊपर है। हमको व्यर्थ चिन्तन में न जाकर निर्संकल्प अवस्था में स्थित होकर परमशान्ति का अनुभव करना एवं बाप की छत्रछाया में, बाप का सानिध्य में रहकर परम आनन्द का और साकार में इस विश्व नाटक को साक्षी होकर देखते हुए परम सुख का अनुभव करना। इसके लिए इस वास्तविकता को सदा स्मृति में रखना है कि जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह अच्छा होगा। ये तीनों सुख वही ले सकता है, जिसको इस देह से न्यारे होने का अभ्यास होगा। देह से न्यारा होकर अपना और सर्व का पार्ट देखने की क्षमता होगी।

जीवात्मा अपना आप ही मित्र और आप ही अपना शत्रु है। हर अपना अविनाशी पार्ट बजा रही है और उस कर्म के अनुसार फल प्राप्त कर रही है। हमको तो इस नाटक को साक्षी होकर देखना है और अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है।

जो हुआ वह टल नहीं सकता और नहीं हुआ वह हो नहीं सकता इस सत्य को सामने रख सदा खुश रहना है। इस विश्व नाटक में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुःख-अशान्ति की कोई स्थान नहीं है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्म स्थिति। जहाँ पवित्रता हैं वहाँ ब्रहमचर्य की धारणा नेचुरल होगी। आवश्यकता के समय जो प्राप्त होने वाली वस्तु अवश्य प्राप्त होगी, सर्व सुख होंगे, इच्छा मात्रम् अविद्या होगी, सर्व आत्माओं के साथ सम्बन्ध अच्छा होगा। भय चिन्ता, दुःख-अशान्ति, राग-द्वेष का नाम निशान नहीं होगा। समय पर कृत्य का संकल्प स्वतः आयेगा, शुभ में अभिरूचि, अशुभ में अरूचि स्वतः होगी। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी स्व-स्थिति में रहें। जब हमारी सर्व आत्माओं के

प्रति शुभ भावना होगी तो उनकी हमारे प्रति भी शुभ भावना अवश्य होगी। इस सनातन सत्य को जान सदा सर्व के प्रति शुभ भावना रखें। जीवात्मा अपना ही मित्र है और अपना आप ही अपना शत्रु है, हर आत्मा अपने कर्म के लिए उत्तरदायी है। तो हमारा न कोई मित्र है और न ही कोई हमारा शत्रु है। न कोई हमारा अपना है और न कोई पराया है। इसलिए अपने पराये का भेद रख व्यर्थ चिन्तन का कोई स्थान नहीं है।

हमको तो अपने मूल स्वरूप में स्थिति होकर निर्संकल्प समाधि अर्थात् बीज रूप की स्थिति में स्थित होकर परम शान्ति का अनुभव करना, परमात्मा के सानिध्य और उसकी छत्रछाया से परमानन्द का अनुभव और साक्षी होकर इस विश्व नाटक का दिग्दर्शन करते हुए परम सुख का अनुभव करना यही इस ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति है। परन्तु इसमें व्यर्थ चिन्तन सबसे बड़ी बाधा है, जिसका निराकरण इस विश्व नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से सहज हो सकता है।

इस विश्व नाटक का सुख अनुभव करने के लिए इस विश्व नाटक के हूबहू पुनरावृति का पूर्णता, (Accuracy) सत्यता, (Eternity) न्यायपूर्णता, कल्याणकारिता, दिव्यता, विविधता, अद्‌भुतता, वास्तविकता आदि विशेष विशेषताओं (Characteristics) का सही ज्ञान और अनुभव होना अति आवश्यक है। इससे व्यर्थ चिन्तन को सहज ही समाप्त करके निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति का अनुभव करें।

ये ड्रामा न्यायपूर्ण, सत्य और कल्याणकारी (Just-Accurate-Auspi- cious) है। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह अच्छा होगा। ये राज संगमयुग पर पता पडता है, तब ही हम अतीन्द्रिय सुख पाते हैं।

निराकार और साकार बाप दोनों को सामने रखने से हम इस शरीर से न्यारे होने की प्रक्रिया सहज सीख सकते हैं क्योंकि दोनों ही देह में प्रवेश और देह से न्यारे होकर कर्म करने और साक्षी होकर इस विश्व नाटक को देखने के प्रतिरूप है।

ड्रामा के यथार्थ स्वरूप में स्थित व्यक्ति की पहचान (Critaria to real understand ling of the knowledge of Drama)

१. सदा साक्षी स्थिति २. निर्संकल्प एवं निर्विकल्प स्वरूप में सहज स्थिति का अभ्यास ३. सदा आत्मिक दृष्टि ४. सदा निर्भय और निर्वैर स्थिति ५. सदा निर्दोष दृष्टि ६. व्यर्थ चिन्तन से मुक्त और सदा समर्थ ७. सदा हर्षित ८. सदा बन्धन मुक्त स्थिति का अनुभव ९. लाभ-हानि, निन्दा-स्तुति ....में समान स्थिति १०. सदा योग युक्त ११. सदा निश्चिन्त ड्रामा

## ड्रामा की न्यायपूर्णता

१. जो पूर्ण रूप से आत्माभिमानी है वही इस ड्रामा के राज को जान सकता और इसे ड्रामा कहने का अधिकारी है। इसलिए जब तक वह अवस्था हो तब तक ड्रामा का ज्ञान होते भी पुरूषार्थ अवश्य करना है। ज्ञान होना अलग है परन्तु ज्ञान की धारणा होना अलग है।

२. इस ड्रामा में सभी पार्टधारी है और परमपिता परमात्मा की प्रिय सन्तान हैं और हरेक आत्मा में कोई न कोई विशेषता अवश्य है, जिसके कारण वह प्रभु प्रिय है। एक बाप को सभी बच्चे प्रिय होते है, इसलिए वह सबके कल्याणार्थ पुरूषार्थ करा रहा है। इस ड्रामा में किसी भी एक ही आत्मा को सर्व प्राप्तियाँ नहीं है। परन्तु हरेक को कोई न कोई विशेष प्राप्ति अवश्य है। स्व-स्थिति में रहकर अपनी प्राप्तियों को देखें तो हर आत्मा उसी सुख-शान्ति का अनुभव करेगी।

३. हर आत्मा को अपने समय अनुसार आधा सुख और आधा दुःख है और अन्त में हरेक की स्थिति सुख दुःख शून्य अर्थात् कर्मातीत होकर घर जाना है।

४. ये हार-जीत का खेल है। ये संगमयुग हर आत्मा के जीत का समय है परन्तु हरेक का अपने पार्ट के समय अनुसार ये संगम का समय आना ही है जब वह भी अपने समय अनुसार अतीन्द्रिय सुख

का अनुभव करेगी। हमारा अभी जीत का समय है तो जीत के समय जीत का सुख लेना ही बुद्धिमानी है।

५. यदि हम आत्माभिमानी अर्थात् साक्षी होकर नाटक को तटस्त होकर देखेंगे तो ये बहुत सुखदायी अनुभव होगा और मान-अपमान सुख-दुःख में समान रहेंगे। जब अज्ञानता के कारण इसमें लिप्त हो जाते अर्थात् देहाभिमान में आ जाते तब सुख अथवा दुःख प्रभाव होता है और ऊंच-नीच, मेरा-तेरा का प्रश्न उठता और ये श्रृंखला कल्पान्त तक चलती रहती, जब तक ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा न आये और पावन बनाकर घर वापस न ले जाये। जब परमपिता परमात्मा आकर ज्ञान देते तब ये श्रृंखला समाप्त होती है और सभी आत्मायें मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा पाती हैं।

६. हरेक आत्मा परमपिता परमात्मा की सन्तान है तो बाप के वर्से पर सर्व का अधिकार है और इसलिए बाबा हरेक को मुक्ति-जीवनमुक्ति अवश्य ही देता है।

७. यदि हम ड्रामा के पट्टे पर खड़े होकर इस नाटक को देखेंगे तो हम निर्संकल्प और निर्विकल्प अवस्था में सहज स्थित हो सकेंगे और ये अवस्थायें परमशान्ति और परम सुख या अतीन्द्रिय सुख देने वाली है। इस स्थिति में कोई व्यक्ति किसीके लिए बाधक नहीं बन सकती है।

८. यदि हम ड्रामा को यथार्थ समझते हैं तो दूसरों के पार्ट को भी यथार्थ रीति समझेंगे और किसीसे राग-द्वेष न होकर प्रेम भाव होगा, तब वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना जाग्रत होगी।

९. यदि ड्रामा में किसी राजा का एक बच्चा गरीब का पार्ट बजाये और गरीब का एक बच्चा राजा का पार्ट बजाये तो उनको राजाई या गरीबी की फीलींग होगी? ड्रामा के पार्ट को देख खुशी और वाह-वाह उसी की होगी जिसका एक्ट उसके पार्ट के अनुरूप सही होगा, चाहे वह गरीबी का हो या राजा का। नाटक में गरीब का बच्चा अमीर का और अमीर का बच्चा गरीब का पार्ट बजा सकता है परन्तु इस नाटक के हम सभी पार्टधारी आत्मायें परमपिता परमात्मा के प्रिय बच्चे हैं और एक बाप को अपने सभी बच्चे प्रिय होते है।

१०. यदि हम 100% डिटैच होकर इस नाटक को देखेंगे तो ये परम आनन्दमय है परन्तु इसके लिए 100% पवित्रता चाहिये। परन्तु ड्रामा के नियमानुसार जब पूर्ण हो जाते तो कर्मातीत अवस्था हो जाती और घर चले जाते। परमपिता परमात्मा ही 100 % आत्माभिमानी स्थिति में पार्ट बजाते क्योंकि वे सदा पावन हैं। इसलिए ब्रह्मा बाबा के साकार तन या गुल्जार दादी के तन में बीमारी अर्थात् दुःख की परिस्थितियाँ होते भी वे उससे निर्लिप्त हैं। ऐसे ही हम को भी उस अवस्था तक पहुँचने तक पुरूषार्थ करना होगा और ये ड्रामा हर आत्मा को अवश्य ही पुरूषार्थ करायेगा।

११. इस ड्रामा में जिसका जो पार्ट है, वही उसको अच्छा लगता है और खींचता रहता है। उसी में उसको सुख अनुभव होता है। अधिकांश मनुष्य शान्ति मांगते है। ...तो शान्तिधाम में जाते और तुम आत्मायें स्वर्ग में जाते हो।

१२. ड्रामा में पार्टधारी का घ्यान अपने पार्ट पर केन्द्रित रहता हो तो पार्ट अच्छी रीति बजा सकता। अगर आगे-पीछे का चिन्तन या दूसरों के पार्ट की और घ्यान जाता तो पार्ट खराब हो जाता है। इसलिए हर आत्मा को परचिन्तन में न जाकर अपनी प्राप्तियों को देख, उनका लाभ उठाने में ही उसका कल्याण है।

१३. अतीन्द्रिय सुख बाप का वर्सा है, जो हर आत्मा को स्वतंत्रता से प्राप्त होता है। परन्तु ड्रामा के विधान अनुसार हर आत्मा अपने समय अनुसार ही उसे प्राप्त करती है। गायन है योगानन्द, परमानन्द ...परमात्मा के साथ सम्बन्ध और उसके प्रति श्रध्धा के द्वारा ही प्राप्त होता है तो आत्मा-परमात्मा-ड्रामा की नालेज को यथार्थ रीति समज इस शरीर से न्यारा होकर ही उसका अनुभव कर सकते है, इसके लिए सभी स्वतन्त्र है।

१४. आत्म स्थिति, परमपिता परमात्मा के साथ का अनुभव, सत्य ज्ञान से प्राप्त होने वाले सुख का अनुभव जो बेहद के बाप का वर्सा है, वह सभी आत्मायें समान रूप से अनुभव कर सकती हैं

और सबको प्राप्त करने का समान अधिकार है। ड्रामा का पार्ट अलग बात है और उससे सुख-शान्ति की प्राप्ति अलग चीज है। वैरायटी ड्रामा में हरेक का पार्ट भी वैरायटी अवश्य ही होगा।

१५. इस ड्रामा में हम देखें तो देखते हैं कि कोई भी आत्मा किसी भी परिस्थिति में है परन्तु वह शरीर छोडकर जाना नहीं चाहती भले वह गरीब है, बीमार है ...जो इस बात को सिद्ध करता है कि वह उससे सन्तुष्ट है।

## ये ड्रामा सत्य है और कल्याणकारी है

ये ड्रामा एक्यूरेट बना हुआ है, जिसमें कुछ परिवर्तन हो नहीं सकता। जड-चेतन सब अपने समय अपना पार्ट रिपीट करते हैं।

समय अनुसार जड, चेतन को और चेतन, जड को प्रभावित करता है। समय पर हर आत्मा को अपने कर्म का फल अपने आप ही मिलता है। ये ड्रामा अपने समय पर हू ब हू रिपीट होगा। इसके किसी भी दृष्य में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता है परन्तु समय परिवर्तन के साथ परिवर्तन अवश्य होता है, जो हू ब हू कल्प पहले की तरह पुनरावृत्त होता है।

इस ड्रामा मे नियमानुसार हर आत्मा को अपने कर्म एवं पुरूषार्थ अनुसार अच्छा या बूरा फल अवश्य मिलता है। हर आत्मा अपने स्वभाव-संस्कार अनुसार जाकर जन्म लेती है। ये ड्रामा किया-प्रतिकिया, पुरूषार्थ-प्रालब्ध-पुरूषार्थ, कर्म-फल-कर्म पर आधारीत अनादि अविनाशी नाटक है।

इस ड्रामा का यथार्थ ज्ञान हमको इस संगमयुग पर ही मिलता और संगमयुग चढती कला का युग है। अभी हमको आत्मा और परमात्मा का भी ज्ञान मिलता है। अपने स्वरूप में स्थित होने से हमको परम सुख अनुभव होता है।

आत्मा सदा काल परमधाम में रहे तो रह नहीं सकती जैसे कोई सदा काल सोता नहीं रह सकता। हरेक को पार्ट में आना ही है। ड्रामा अनुसार ही हमको परमपिता परमात्मा से मिलन का अवसर मिलता है और तब ही परमानन्द का अनुभव सम्भव है और इस अनुभव के कारण ही भक्तिमार्ग में आत्मायें परमात्मा को याद करती है। आत्मा में नेचुरल प्रवृति है- नाटक आदि को देखकर खुश होने का हैं। इस नाटक को भी हम साक्षी होकर देखते तो अति हर्ष होता है।

जब पतित और दुःखी होते तो परमात्मा आकर मिलता, जो मिलन अति सुखदायी होता है। इस ड्रामा में जिसका जो पार्ट है, वही उसको अच्छा लगता है और खींचता रहता है। उसी में उसको सुख अनुभव होता है। अधिकांश मनुष्य शान्ति मांगते है ...तो वे शान्तिधाम में जाते और तुम आत्मायें स्वर्ग में जाते हो।

**प्रश्नः-** भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों में ड्रामा लागू होता है या केबल भूतकाल पर ही। ड्रामा को तीनों कालों में लागु करने मे क्या दो लाभ और क्या दो हानियाँ है?

**उत्तरः-** ये नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी, विविधतापूर्ण और परम आनन्दमय है। जो इसको साक्षी होकर देखता है, वह इसके परम आनन्द को अनुभव करता है। सत्य सदा ही सत्य और कल्याणकारी होता है। ये विश्व नाटक तीनों कालों में हू ब हू पुनरावृत होता है, इसकी वास्तविकता को जानने से अनेक लाभ है, जो पुरूषार्थ में गति प्रदान करते है। इससे सहज ही साक्षी स्थिति हो जाती है, जो संगमयुग की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है और अतीन्द्रिय सुख का एकमात्र साधन है। इससे हम ईर्ष्या द्वेष और भविष्य की आशंकाओं से बच जाते हैं, जिससे वर्तमान में श्रेष्ठ संकल्प को धारण कर सकते हैं। वर्तमान ही भविष्य का आधार और दिग्दर्शक है।

जब आत्म-स्थिति में स्थित होकर इस नाटक को देखते तो मनुष्य कभी भी पुरूषार्थहीन नहीं हो सकता है क्योंकि ड्रामा पुरूषार्थ और प्रारब्ध पर आधारित है। आत्मा पुरूषार्थ बिगर रह नहीं सकती। इस ड्रामा को, ड्रामा समझकर देखना और हर परिस्थिति में साक्षी होकर रहना भी एक श्रेष्ठ पुरूषार्थ है। तीनों कालों में हूबहू रिपीट होने से ज्ञान के कारण बीती को बीती करके, उसके चिन्तन से और

भविष्य की आशंका से भी बच जाते हैं, जिसके कारण निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति को धारण कर मुक्ति-जीवनमुक्ति का सहज अनुभव कर सकते हैं।

जब हम तीनों कालों में इस नाटक की पुनरावृति को अनुभव करते हैं तो हम अनेक व्यर्थ संकल्प-विकल्पों, चिन्ताओं से बच जाते हैं, जो मनुष्य को भविष्य के लिए उत्पन्न होती है। इससे हमारी आत्मिक शक्ति हासित होने से बच जाती है! इसीलिए गायन है बनी बनाई बन रही ...जो अनहोनी होय। बाबा ने भी अनेक बार मुरलियों में इन शब्दों को बोला है।

ओम् शान्ति.... शान्ति.... शान्ति...